धर्म, समाज और तर्क पर अग्नियोग आश्रम में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित

गुरुग्राम स्थित कार्यशाला में बातचीत के बाद प्रतिभागियों की सामूहिक तस्वीर

हरियाणा के गुरुग्राम स्थित बहलपा ग्राम के अग्नियोग आश्रम में धर्म, समाज और तर्क को लेकर 4 जनवरी से 6 जनवरी, 2019 तक तीन दिवसीय कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई। ख्यात सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश के सान्निध्य में इस कार्यक्रम में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' को आधार मान यहां आए विभिन्न कार्यक्षेत्रों से देश के अलग–अलग राज्यों से आए साथियों ने कई नई योजनाओं पर बातचीत की। कार्यशाला में हिस्सेदारी करने वाले 46 लोगों ने इस दौरान नई उर्जा से लैस हो आगे की योजनाओं को अपने–अपने क्षेत्रों में लागू करने की भी जानकारी साझा की।

गुड़गांव के बहलपा स्थित अग्नियोग आश्रम में आयोजित इस तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत 4 जनवरी को दोपहर 2 बजे से की गई। पहले दिन पहुंचे साथियों से कार्यक्रम के मकसद और उनके कार्यक्षेत्रों की विशेषज्ञता पर चर्चा हुई।

कार्यशाला के बाद बहलपा स्थित पहाड़ियों पर भ्रमण करते भागीदार

दूसरे दिन की शुरुआत योग–व्यायाम से हुई, जिसमें प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. विजाता आर्या ने योगासन के साथ–साथ योग और प्राकृतिक चिकित्सा पर अपनी बातचीत रखी और स्वामी अग्निवेश ने भी इस दौरान योग के महत्व को लेकर अपने जीवनानुभवों को साझा किया। उसी दिन दूसरे सत्र में स्वामी अग्निवेश ने समाज और धर्म तथा जीवन और तर्क पर साथियों के साथ बातचीत रखी। इसमें कई साथियों ने सवाल–जवाब भी किए। तीसरे सत्र में साथी बहलपा की पहाड़ियों की तरफ घूमने निकले, और गीत–संगीत के साथ तमाम मसलों पर चर्चा हुई।

तीसरे दिन सुबह योग के साथ दिन की शुरुआत हुई। विजाता आर्या ने योग के लाभ बताते हुए सभी साथियों को योगाभ्यास करवाया। उसके बाद आयोजित सत्र में आर्यसमाज से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी आर्यवेश ने भी अपनी बात रखी।

कार्यशाला में मौजूद लोगों ने खासतौर पर धर्म, तर्क, योग, जीवन और प्राकृतिक चिकित्सा पर बातचीत, विमर्श और पड़ताल की। इस दौरान धर्म, तर्क और जीवन के आपसी अंतरसंबंधों और अंतरनिहित तत्वों पर भी बातचीत की गई। स्वामी अग्निवेश ने ''वसुधैव कुटुंबकम'' की परिकल्पना के साथ इस बात पर विशेष जोर दिया कि समाज में धर्म के नाम पर फैलाई जा रही अतार्किक और संकीर्ण बातें खत्म करने की दिशा में काम करना होगा, ताकि समाज में समावेशी भाव और बहुलतावादी संस्कृति को लेकर लोगों में चिंतन और व्यवहार का विस्तार हो।

तीन दिन की इस कार्यशाला में अलग–अलग कार्यक्षेत्रों के सक्रिय और विचारवान लोग शामिल रहे। कार्यशाला में हुई बातचीत के दौरान इन लोगों ने संकल्प लिया कि वे यहां मिली सीखों और मूल्यों को अपने–अपने कार्यक्षेत्रों में वृहद स्तर पर ले जाएंगे, ताकि समाज में वैमनस्यता कम हो और सामाजिक सौहार्द बढ़े, ज्ञान–विज्ञान के प्रति लोगों का रूझान बढ़े। विज्ञान के आधार पर लोग तर्कशील बनें।

कार्यशाला के दौरान सभी भागीदारों ने सात्विक जीवन पद्धति अपनायी और जीवन के नएपन के साथ यहां से विदा ली। साथ ही संकल्प लिया कि यहां के मूल्यों को समाज में फैलाने में वो योगदान देंगे। साथियों ने इस दौरान गांधी जी के मूल्यों और सपनों के भारत निर्माण की ओर कुछ कदम आगे बढ़ें, इस तरफ प्रयत्न किए जाने के बारे में भी बातचीत की।

पूरी कार्यशाला में स्वामी अग्निवेश का विशेष जोर वसुधैव कुटुम्बकम की परिकल्पना और उसे जमीनी स्तर पर लागू की तरफ कदम बढ़ाने पर रहा। उन्होंने कहा कि आज में जबकि सामाजिक सहिष्णुता लगातार घटती जा रही है, वैसे में मूल्य ही हमारे पास ऐसी परंपरागत राजनीतिक थाती हैं, जो देश को उन्नति और शांति की राह पर आगे ले जाएंगे। इस दौरान अग्निवेश जी ने ''वसुधैव कुटुम्बकम'' का एक घोषणापत्र भी कार्यशाला में हिस्सा लेने वाले लोगों के साथ साझा किया, जिसमें इसके मूल्यों, मिशन, कार्ययोजना और क्रियाकलापों के बारे में विस्तार से बात और परिचर्चा की गई। इसके अलावा इस दौरान ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के सप्तक्रांति के 7 मूल सूत्रों पर भी स्वामी अग्निवेश ने साथियों से विस्तृत परिचर्चा की और संभावनाओं पर साथियों ने अपनी राय व्यक्त की।

स्वामी अग्निवेश ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम के तहत सभी जन विश्व परिवार के सदस्य हैं। इस परिवार में सभी लोग जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे और कोई किसी पर हावी नहीं होगा। साथ ही विश्व परिवार में शामिल होने वाले लोग मानव–मानव एक समान के नारे को साकार कर जातिवाद, सांप्रदायिकता, नर–नारी विषमता, नशा, अंधविश्वास एवं पाखंड, भ्रष्टाचार तथा हिंसा एवं शोषणमुक्त समाज स्थापित कर ईश्वर की उपासना के श्रेष्ठ और सरल मार्ग पर अग्रसर हों।

कार्यशाला से निकले कार्यभार

–उड़ीसा से आए महेश सायता ने सप्तक्रांति के मूल्यों को लेकर सभी कार्यक्षेत्रों में काम करने की जिम्मेदारी ली।

–कार्यशाला के दौरान बिहार से आए साथी मनोहर मानव ने आम लोगों के बीच जाकर जन जागरुकता अभियान चलाने की जिम्मेदारी ली।

–महाराष्ट्र से आयीं महिला साथी सुशीला मोराले ने कहा कि महिलाओं के बीच गांधी जी के शांति, अहिंसा और बराबरी के मूल्यों को लेकर जाएंगी।

–इस कार्यक्रम में आर्य समाज से जुड़े दर्जनों लोग पहुंचे थे। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से आए साथी विपिन आर्य ने स्वच्छता, शांति और गांधी जी के आदर्शों पर कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही।

–पेशे से शिक्षक दिल्ली से आए मौलाना एआर शाहीन कुरैशी ने कहा कि वे मुस्लिम समाज और स्कूलों–कॉलेजों में धर्म और शांति को लेकर पहल करेंगे।

–इस दौरान अंतर्धार्मिक और अंतरजातीय विवाह करने वाले युवाओं का सम्मान समारोह आयोजित किए जाने पर भी सहमति बनी।

जनजागरण कार्यक्रम के रूप में 26 जनवरी से कन्याकुमारी के महात्मा गांधी मण्डयम् से केरल के कासरगोड 10 फरवरी तक की 700 कि.मी. यात्रा पर भी विस्तार से चर्चा हुई। उसकी तैय्यारी के लिए स्वामी अग्निवेश ने 11 दिसम्बर, 2018 केरल की यात्रा भी की। संगोष्ठी के अनेक प्रतिभागी उसमें भाग लेने के लिए आगे आये। पर 20–21 जनवरी, 2019 को अचानक स्वामी अग्निवेश के स्वास्थ्य में कमी की वजह से यह यात्रा कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है।

कार्यशाला में देशभर के विभिन्न राज्यों और कार्यक्षेत्रों से हिस्सेदारी करने वाले 46 लोगों में सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश, आर्यसमाज से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी आर्यवेश, बेटी बचाओ आंदोलन के लिए काम कर रहीं कुमारी प्रवेश और पूनम आर्या, मजदूरों के बीच काम कर रहे डीयू छात्र लद्दाख मूल के दावा जांगपो, रामफल आर्य, हंसराज भारतीय, रुद्रप्रताप प्रधान, वीरेंद्र सिंह, संजीव कुमार, डॉ. रणवीर सिंह मलिक, मजदूरों के बीच काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता निर्मल गोराना, हरपाल सिंह, अजय कुमार, ऋषि राज, अनिल काटेवाड, बंधुआ मुक्ति मोर्चा से जुड़े दलसिंगार सोनू, सामाजिक कार्यकर्ता हवा सिंह, चंदन कुमार मिश्रा, जामिया विश्वविद्यालय से जुड़ी जैनब सिद्दीकी, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश, शिक्षक मौलाना एआर शाहीन कुरैशी, रमेश आर्य, स्वामी विजयवेश, डॉ. विरेंद्र कुमार, डॉ. विजाता आर्या, अंकित कुमार गोयल, चंदन कुमार, पत्रकार अजय प्रकाश, प्रबंधन से जुड़े राजीव रंजन, पत्रकार प्रेमा नेगी, ओड़िसा के साथी महेश सायता, महाराष्ट्र से सुभाष निम्बालकर, बिहार से मनोहर मानव, बंगलोर से स्वामी वेदात्मवेश, नोयडा से डॉ. मुमुक्षु आर्य, बिहार से मधुसूदन कुमार, महाराष्ट्र से एडवोकेट विशाल कदम, दिल्ली के सतेंद्र सेवार्थी, गुड़गांव के साहिब सिंह भट्टी, महाराष्ट्र से प्रोफेसर सुशीला मोराले, फरीदाबाद से मायाराम सूर्यवंशी, सहारनपुर से पत्रकार विपिन आर्या, आई.आई.टी. दिल्ली से सुमेधा नंद साहू और सारांश शामिल रहे।

कार्यशाला की यादें चित्रों के माध्यम से :–

कार्यशाला के प्रतिभागी के समूह चित्र

कार्यशाला में प्रतिभागी ध्यान करते हुए

प्रतिभागियों को योग कराती और प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में बात करतीं डॉक्टर विजाता आर्य

कार्यशाला मे प्रतिभागी योग करते हुए

कार्यशाला प्रांगण में आगामी योजनाओं पर बातचीत

कार्यशाला के आखिरी दिन बहलपा इलाके की पहाड़ी पर शिवमंदिर में धर्म की प्रासंगिता पर विचार–विमर्श करते हुए प्रतिभागी